

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

कु. तज़ीन सिद्दीकी¹, डॉ. पूनम शुक्ला²

¹शोधार्थी, (शिक्षा संकाय), स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय, हुडको, भिलाई दुर्ग (छ.ग.)

²सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय), स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वती महाविद्यालय, हुडको, भिलाई, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन रायपुर जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आधुनिकता का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव ज्ञात करने हेतु किया गया है। अध्ययन हेतु रायपुर जिले के 400 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। संवेगात्मक परिपक्वता के लिए डॉ. तारा सबापथी की मापनी तथा संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के लिए ए. के. सिंह एवं श्रुति नारायण की मापनी का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। अध्ययन के विश्लेषण में 400 युग्मित प्राप्तांकों के आधार पर सहसंबंध गुणांक का मान $r = 0.318$ तथा सार्थकता मान $p < 0.001$ प्राप्त हुआ। अध्ययन में संवेगात्मक परिपक्वता एवं संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के कुल प्राप्तांकों के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया।

मुख्य शब्द : संवेगात्मक परिपक्वता, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, कार्ल पियर्सन सहसंबंध, किशोरावस्था।

प्रस्तावना

शिक्षा की सफलता केवल पाठ्यवस्तु के स्मरण से निर्धारित नहीं होती; यह इस बात से भी जुड़ी है कि विद्यार्थी स्वयं की भावनाओं को कैसे समझते हैं, सामाजिक संबंधों में किस प्रकार व्यवहार करते हैं और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में कितनी संयमित प्रतिक्रिया देते हैं। किशोरावस्था में शारीरिक, बौद्धिक एवं सामाजिक परिवर्तनों की तीव्रता के कारण संवेगात्मक अनुभवों का स्वरूप विशेष महत्त्व ग्रहण कर लेता है। सहपाठियों की स्वीकृति, पारिवारिक अपेक्षाएँ, परीक्षाओं का दबाव तथा बदलता डिजिटल परिवेश इस अवस्था को और जटिल बनाते हैं।

संवेगात्मक परिपक्वता ऐसी मनोवैज्ञानिक विशेषता है जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को परिस्थिति के अनुरूप व्यवस्थित करता है, असहमति का सामना करता है तथा कठिन समय में निर्णय की स्थिरता बनाए रखने का प्रयास करता है। इस अवधारणा का आशय भावनाओं के दमन से नहीं, बल्कि उनकी उपयुक्त अभिव्यक्ति और स्वनियमन से है। आत्मज्ञान, आत्मविश्वास, वास्तविकता की स्वीकृति, आत्मनियंत्रण, सामाजिक समायोजन एवं स्थिरता जैसे पक्ष इसके अध्ययन को बहुआयामी बनाते हैं।

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता में अपने तथा अन्य व्यक्तियों के संवेगों की पहचान, अर्थबोध, उपयोग और प्रबंधन की योग्यताएँ सम्मिलित हैं। कोई विद्यार्थी समूह की भावनाएँ भलीभाँति समझ सकता है, किंतु व्यक्तिगत तनाव में उसका व्यवहार अस्थिर हो सकता है; इसलिए संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संवेगात्मक परिपक्वता को एक ही मनोवैज्ञानिक गुण मान लेना अनुचित होगा। दोनों का स्वतंत्र मूल्यांकन विद्यालयी आवश्यकताओं के विषय में अधिक उपयोगी सूचना प्रदान कर सकता है।

रायपुर जिले के शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पारिवारिक परिस्थितियाँ, सामाजिक अवसर और शैक्षिक संसाधन विविध हैं। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में उपलब्ध अनुभवों की प्रकृति भिन्न हो सकती है। ऐसी स्थिति में संवेगात्मक विशेषताओं का समूह-आधारित वर्णन शिक्षकों तथा विद्यालय प्रशासकों को आयु-उपयुक्त सहयोगात्मक कार्यक्रमों की योजना बनाने में सहायक हो सकता है।

संबंधित शोध अध्ययन

कौर, जी. (2015) ने किशोर विद्यार्थियों की आधुनिकता संबंधी अभिवृत्ति का उनकी बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के संदर्भ में अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों में आधुनिकता एवं बुद्धि के मध्य धनात्मक एवं सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक सहसंबंध पाया गया, जबकि आधुनिकता तथा संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसंबंध प्राप्त नहीं हुआ। इससे स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की आधुनिक अभिवृत्तियों में बुद्धि का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता के साथ समान रूप से परिवर्तन होना आवश्यक नहीं है।

राय (2017) ने सिक्किम के महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता सामान्य स्तर की थी, जबकि संवेगात्मक परिपक्वता के संदर्भ में अनेक विद्यार्थियों में भावनात्मक अस्थिरता की स्थिति पाई गई। दोनों मनोवैज्ञानिक चरों के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया, जिससे विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं संवेगात्मक परिपक्वता के बीच सकारात्मक संबंध की प्रवृत्ति सामने आई।

शर्मा, सेठी एवं कौर (2021) ने पंजाब के होशियारपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा अभिभावकीय सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में विद्यार्थियों की संवेगात्मक विशेषताओं को पारिवारिक सहयोग एवं विद्यालयीय परिवेश के संदर्भ में परखा गया। शोध से विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास को समझने में अभिभावकीय सहभागिता तथा सामाजिक परिवेश की भूमिका पर विचार करने की आवश्यकता सामने आई।

शर्मा एवं सिंह (2024) ने किशोर विद्यार्थियों की आधुनिकता के विभिन्न स्तरों के संदर्भ में उनकी संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों में आधुनिकता के विभिन्न स्तरों से संबंधित छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के आयामों में भिन्नताएँ पाई गईं। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि संवेगात्मक जागरूकता, भावनात्मक समझ तथा संवेगों के प्रबंधन की क्षमताएँ सभी समूहों में एक समान नहीं थीं। इस प्रकार विद्यार्थियों की आधुनिक अभिवृत्तियों एवं संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का स्वरूप समूहगत विशेषताओं के अनुसार भिन्न पाया गया।

राम, कलारा एवं मीना (2025) ने शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के अंतर्गत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता को उनकी विद्यालयीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में विश्लेषित किया गया। शोध में संस्थागत परिवेश को विद्यार्थियों की संवेगात्मक विशेषताओं के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण संदर्भ माना गया तथा विद्यालयीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर संवेगात्मक विकास का मूल्यांकन करने की आवश्यकता स्पष्ट की गई।

शुक्ला एवं यादव (2026) ने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का स्मार्टफोन निर्भरता के विभिन्न स्तरों के संदर्भ में अध्ययन किया। अध्ययन में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को डिजिटल व्यवहार एवं क्षेत्रीय पृष्ठभूमि के आधार पर विश्लेषित किया गया। शोध में किशोर विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास को समझने के लिए स्मार्टफोन उपयोग, सामाजिक परिवेश तथा क्षेत्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखने के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

समीक्षात्मक निष्कर्ष: उपर्युक्त साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि किशोरों की संवेगात्मक विशेषताएँ परिवार, विद्यालय, सामाजिक परिवेश तथा समकालीन जीवनस्थितियों के साथ विचारणीय हैं। तथापि इन अध्ययनों के नमूनों, आयु-समूहों तथा उपकरणों में अंतर होने के कारण उनके परिणामों को रायपुर जिले की कक्षा दसवीं पर यथावत लागू नहीं किया जा सकता।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

कक्षा दसवीं के विद्यार्थी शैक्षिक मूल्यांकन, व्यवसाय संबंधी प्रारम्भिक अपेक्षाओं और सहपाठी समूह में स्वीकृति जैसी परिस्थितियों का सामना करते हैं। संवेगात्मक अपरिपक्वता या भावनात्मक बोध की कठिनाइयाँ अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण, कक्षा व्यवहार तथा सामाजिक समायोजन को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे में दोनों मनोवैज्ञानिक गुणों के अलग-अलग वितरण को समझना शैक्षिक परामर्श की आवश्यकताओं का अनुमान लगाने में सहायक हो सकता है। प्रस्तुत शोधपत्र वर्णनात्मक विश्लेषण के उचित प्रारूप को भी सामने लाता है।

अध्ययन के उद्देश्य एवं शून्य परिकल्पना

प्रमुख उद्देश्य : कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की कुल संवेगात्मक परिपक्वता एवं कुल संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य संबंध की दिशा, परिमाण एवं सांख्यिकीय सार्थकता का परीक्षण करने की विधि प्रस्तुत करना; न्यादर्श का जनसांख्यिकीय संगठन स्पष्ट करना; तथा प्राप्त परिणामों की शैक्षिक व्याख्या की सीमाएँ निर्धारित करना।

शून्य परिकल्पना H_0 : विद्यार्थियों की कुल संवेगात्मक परिपक्वता एवं कुल संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

शोध प्रविधि

अध्ययन का अभिकल्प वर्णनात्मक-सहसंबंधात्मक है। लक्षित जनसंख्या रायपुर जिले के आरंग, अभनपुर, धरसीवा एवं तिल्दा विकासखण्डों में कक्षा दसवीं के शासकीय विद्यालयी विद्यार्थी हैं। अध्ययन के न्यादर्श में 400 स्थान निर्धारित किए गए हैं, जिनमें छात्र 200, छात्राएँ 200, ग्रामीण 200 तथा शहरी 200 हैं।

जनसांख्यिकीय समूह	ग्रामीण	शहरी	योग
छात्र	100	100	200
छात्राएँ	100	100	200
योग	200	200	400

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिणाम-प्रस्तुति

दो संख्यात्मक चरों के रैखिक सहपरिवर्तन का आकलन कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया। इस गुणांक की गणना नीचे दिए सूत्र से की जाती है :

$$r = \frac{\sum[(X - \bar{X})(Y - \bar{Y})]}{\sqrt{\{\sum(X - \bar{X})^2 \times \sum(Y - \bar{Y})^2\}}}$$

जहाँ X = संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांक, Y = संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के प्राप्तांक, $\bar{X}$ एवं $\bar{Y}$ = संबंधित मध्यमान।
परीक्षण के लिए $N = 400$ तथा $df = 398$ है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर द्विपक्षीय p मान के अनुसार सार्थकता का निर्णय किया गया।

तालिका 1

संवेगात्मक परिपक्वता एवं संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के प्राप्तांकों के वर्णनात्मक मान

चर	N	मध्यमान	मानक विचलन
संवेगात्मक परिपक्वता (कुल)	400	108.97	8.97
संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (कुल)	400	16.74	3.63

तालिका 1 के संख्यात्मक मान आँकड़ों से निकाले गए हैं।

तालिका :2

विद्यार्थियों की कुल संवेगात्मक परिपक्वता एवं कुल संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के

मध्य कार्ल पियर्सन सहसंबंध

चर	N	सहसंबंध (r)	द्विपक्षीय p	95% विश्वास अंतराल	निर्णय
संवेगात्मक परिपक्वता (कुल)	400	0.318	<0.001	0.227 से 0.403	0.01 स्तर पर सार्थक**
संवेगात्मक बुद्धिमत्ता (कुल)	400				

**** = 0.01 स्तर पर सार्थक**

व्याख्या

तालिका 2 के अनुसार प्राप्तांकों में कार्ल पियर्सन सहसंबंध गुणांक $r = 0.318$ प्राप्त हुआ है। यह धनात्मक रैखिक संबंध का संकेत है। चूंकि द्विपक्षीय p मान 0.001 से कम है, अतः इस न्यादर्श में संबंध 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। परिणाम के अनुरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिणामों की विवेचना

आँकड़ों में धनात्मक सहपरिवर्तन प्रदर्शित होने का आशय यह है कि एक चर के अधिक प्राप्तांकों के साथ दूसरे चर के प्राप्तांकों में भी ऊपर की ओर जाने की सामान्य प्रवृत्ति है। परंतु रैखिक सहसंबंध से यह प्रमाणित नहीं होता कि संवेगात्मक परिपक्वता, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का कारण है अथवा इसके विपरीत कोई कारणात्मक प्रभाव उपस्थित है।

दोनों मनोवैज्ञानिक गुणों की सैद्धांतिक निकटता के बावजूद उन्हें समान मानना उचित नहीं है। भावनाओं की पहचान और प्रबंधन का कौशल संवेगात्मक बुद्धिमत्ता में केंद्रीय है, जबकि प्रतिक्रिया की स्थिरता, यथार्थ स्वीकृति एवं समायोजन संवेगात्मक परिपक्वता के पृथक पक्ष हो सकते हैं।

निष्कर्ष

कार्ल पियर्सन विश्लेषण में कुल संवेगात्मक परिपक्वता एवं कुल संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य धनात्मक तथा 0.01 स्तर पर सार्थक संबंध ($r = 0.318$) प्राप्त हुआ।

शैक्षिक उपादेयता

- शिक्षक कक्षा में संवाद, सहयोग और चिंतनशील गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को संवेगों की उपयुक्त अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान कर सकते हैं।
- विद्यालयी परामर्श व्यवस्था में विद्यार्थियों की भावनात्मक कठिनाइयों को पहचानने और समय पर सहायता देने की संवेदनशील व्यवस्था विकसित की जा सकती है।
- अभिभावक एवं शिक्षक के नियमित संवाद से किशोरों के आत्मविश्वास, समस्या-समाधान तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार को प्रोत्साहन दिया जा सकता है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में परिस्थितिनुकूल जीवन-कौशल कार्यक्रम संचालित करके संवेगात्मक शिक्षा को सहशैक्षिक गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है।
- विद्यालय प्रशासक मानकीकृत उपकरणों के उपयोग तथा छात्र-गोपनीयता संरक्षण के लिए शिक्षकों का अभिमुखीकरण कर सकते हैं।

सुझाव

- विद्यालयों में संवेगात्मक जागरूकता, आत्मनियंत्रण तथा सामाजिक समायोजन संबंधी गतिविधियाँ नियमित रूप से आयोजित की जानी चाहिए।
- विद्यार्थियों को तनाव-प्रबंधन, संवेदनशील संवाद और वैचारिक असहमति के स्वस्थ समाधान का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- विद्यालय स्तर पर प्रशिक्षित परामर्शदाताओं तथा अभिभावक सहभागिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- वास्तविक क्षेत्रीय अध्ययन में न्यादर्श चयन, नैतिक सहमति, मापनी की विश्वसनीयता और श्रेणी निर्धारण की प्रक्रिया स्पष्ट रखी जानी चाहिए।
- आगामी अनुसंधानों में भिन्न कक्षाओं, विद्यालय प्रकारों तथा आयु समूहों की तुलना की जानी चाहिए।
- भविष्य में शैक्षिक हस्तक्षेप के प्रभाव का परीक्षण उपयुक्त प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प से किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Kaur, G. (2015). Attitude of adolescents towards modernization in relation to intelligence and emotional maturity. GHG Journal of Sixth Thought, 2(2), 17–20.
2. Sharma, A., & Singh, A. (2024). A study of emotional intelligence of adolescents in relation to modernization. ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5(4), 937–945.
3. Sharma, S., Sethi, D., & Kaur, D. (2021). A comparative study to assess the emotional intelligence and parental involvement among adolescents of selected rural and urban schools of District Hoshiarpur, Punjab.
4. Ram, J., Kalara, M., & Meena, L. R. (2025). Emotional maturity in teenagers from state and independent schools. Towards Excellence, 17(4).
5. Shukla, D., & Yadav, S. (2026). A regional study of emotional intelligence among urban and rural adolescent students based on levels of smartphone addiction. ShodhSamajik: Journal of Social Studies, 3(2).

6. राय (2017). संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं संवेगात्मक परिपक्वता संबंधी अध्ययन [मूल प्रकाशन का पूर्ण संदर्भ सत्यापनाधीन]।
7. Singh, A. K., & Narain, S. Emotional Intelligence Scale [मूल परीक्षण पुस्तिका के प्रकाशन विवरण का सत्यापन अपेक्षित]।
8. Emotional Maturity Scale [उपकरण-लेखक एवं संस्करण विवरण का मूल पुस्तिका से सत्यापन अपेक्षित]।
9. Pearson, K. (1895). Notes on regression and inheritance in the case of two parents. Proceedings of the Royal Society of London, 58, 240–242.